राज कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 89

बांकेलाल का कमाल

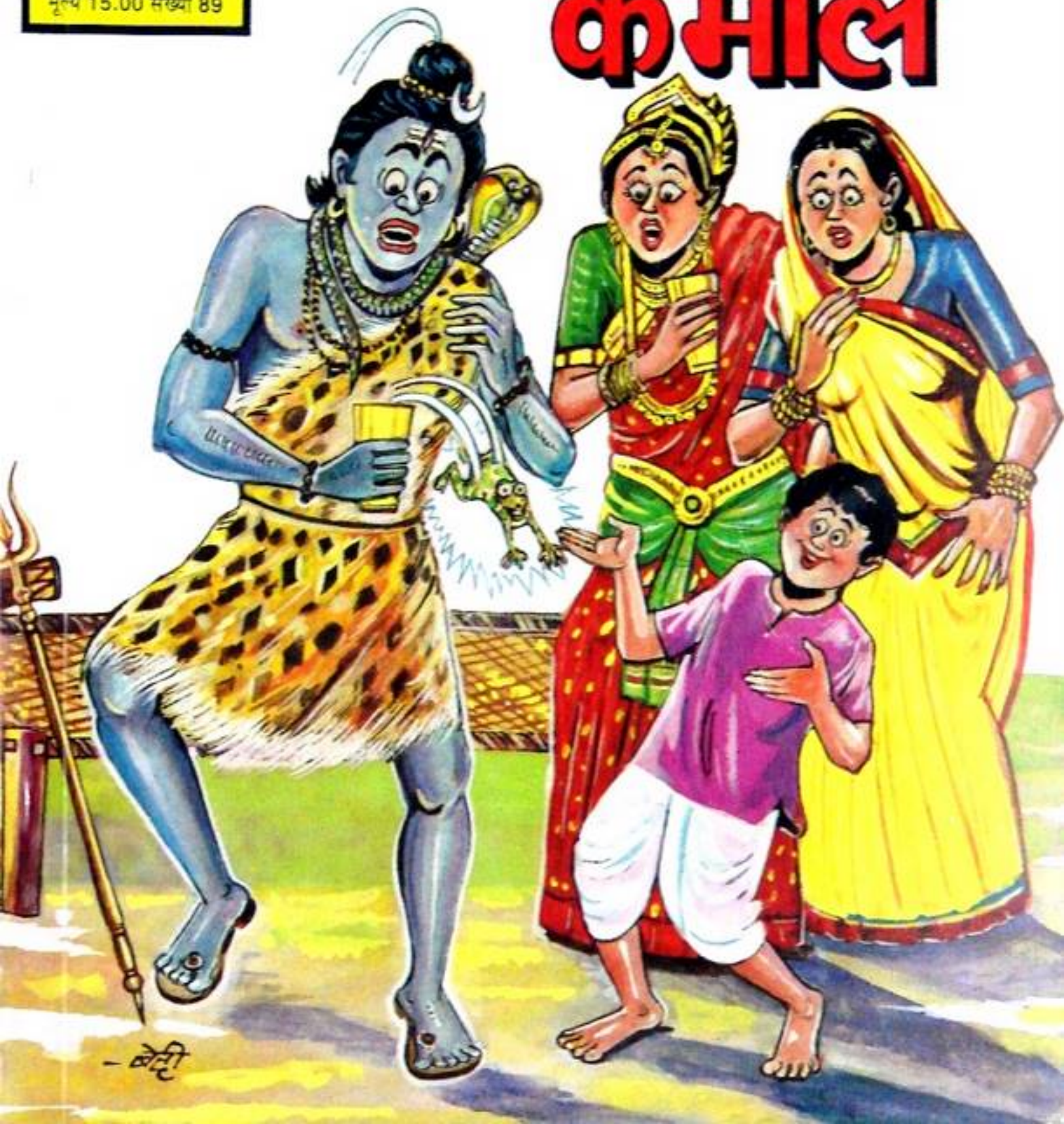

बांकेलाल का कमाल
चित्रांकन • बेदी • कहानी • पविन्दर जुनेजा • सम्पादक • मनीष चंद्रगुप्त
बहुत समय पहले की बात है। रामपुर गांव में एक गरीब आदमी नन्कू, अपनी पत्नी गुलाबवती के साथ रहा करता था। नन्कू दिन भर गांव के जमींदार के खेतों में काम करता था...
... और शाम को काम के बदले उसे जो अनाज मिल जाता था, पति-पत्नी उसे खाकर सन्तुष्ट रहते थे।
गुलाबवती प्रतिदिन रात को सोने से पहले घंटों भगवान शिव की पूजा किया करती थी।
ओऽम नमः शिवाय
ओऽम नमः शिवाय

उस समय भगवान शिव कैलास पर्वत पर पार्वती जी के साथ बैठे बातें कर रहे थे- जब...
ओऽम् नमः शिवाय ओऽम् नमः शिवाय
यह मेरी सच्ची पुजारिन की पुकार है!
स्वामी! यह कौन है, जो नित्य इस समय आपको याद करती है?
सच्ची पुजारिन! यह आप कैसे कह सकते हैं कैलास-पति?
मैं समझ गया प्रिये, कि तुम क्या चाहती हो...
...तुम स्वयं पृथ्वी पर चलकर मेरी पुजारिन से मिलना चाहती हो, हम तुम्हारी यह मनोकामना अवश्य पूरी करेंगे!
...और फिर उस रात गुलाबवती ने जैसे ही पूजा समाप्त कर आंखें खोलीं-
अरे, भगवन आप मैया पार्वती के साथ!! मैं तो धन्य हो गई!
हम तुम्हारे भक्तिभाव से बेहद प्रसन्न हैं गुलाबवती! मांगो क्या मांगती हो?
प्रभु! आपके दर्शनकर मैंने सब कुछ पा लिया। फिर भी आपकी कृपा-दृष्टि मुझ पर है, तो आप मुझे एक पुत्र दे दें!
एवमस्तु!
और इसी के साथ भगवान शिव और पार्वती आलोप हो गए।

खुशी से झूमती गुलाबवती ने जब यह बात सोते हुए ननकू को जगाकर बताई तो वह भी मारे खुशी के उछल पड़ा।

त...तुम सच कह रही हो भाग्यवान... म... मैं... बा...प बनूंगा!

जी!

वर्ष बीतने से पहले ही गुलाबवती ने एक पुत्र को जन्म दिया।

हे भगवान, आज मैं कितना खुश हूं! भागवान! मैंने तो इसका नाम भी सोच लिया है, बांकेलाल... क्यों कैसा रहेगा?

वाह! कितना सुन्दर नाम सोचा है आपने!

फिर बांके लाल अपने पिता के प्यार एवं मां की ममता की छांव में बड़ा होने लगा।

और बांकेलाल जब सात-आठ वर्ष का हुआ तो, पिता के लाड़-प्यार ने उसे शरारती बना दिया।

हाय मैया!

चटाक!

उन्हीं दिनों भगवान शिव, पार्वती जी के साथ आकाश मार्ग से उधर से गुजर रहे थे कि —

नाथ! आपको याद है न, कुछ वर्ष पूर्व आपने इस गांव की एक स्त्री को पुत्र प्राप्ति हेतु वर दिया था।

प्रिये, मैं अपने भक्तों को कभी नहीं भूलता!

नाथ ! मैं आपके आशीर्वाद का फल, यानि उस बालक को देखना चाहती हूं !

अवश्य प्रिये !

और जब भगवान शिव पार्वती के साथ गुलाबवती के घर पहुंचे, तो उस समय घर में बांकेलाल और गुलाबवती दोनों ननकू खेतों पर काम करने गया हुआ था।

भगवन् ! आ... आप... आइए, भीतर चल कर विराजिए !

नहीं गुलाबवती हम अब चलेंगे। हम तो सिर्फ इस बालक को देखने आए थे।

ऐसा कैसे हो सकता है भैया, आज तो आपको इस गरीब का आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा !

बहुत इंकार करने के बाद, आखिर में उन्हें गुलाबवती की बात माननी ही पड़ी।

और उस समय गुलाबवती के घर में तो कुछ था नहीं, किन्तु वह पड़ोस के घर से थोड़ा दूध मांग लाई और उसे गरम कर दो गिलासों में डाला। और फिर –

उऽ ईऽऽ अभी तो दूध गर्म है ! जब तक यह ठण्डा होता है, मैं प्रभु के दर्शन ही क्यों न करूं !

और जैसे ही गुलाबवती रसोई से बाहर निकली, खेलता हुआ बांकेलाल रसोई में पहुंचा –

अरे ! ये मेंढक कहां से आया ?

शरारती बांकेलाल ने मेंढक पकड़ा...

... और दूध से भरे दो गिलासों में से एक में डाल दिया

हूं, अब आएगा मजा !

थोड़ी ही देर बाद वह मेंढक वाला दूध से भरा गिलास शिव के हाथ में था तभी–
अरे ये क्या?
???
दूध में मेंढक!
ही-ही-ही
बांके को मुस्कराता देख, भगवान तुरन्त समझ गए कि यह शरारत इसी ने की है। अतः ...
... वह क्रोधित हो उठे।
उद्दंड बालक! तूने मुझ शुद्ध शाकाहारी को धोखे से मांस का अर्क पिलाने की कोशिश की, जा मैं तुझे शाप देता हूं, तू हमेशा निकम्मा और शरारती रहेगा!
गुलाबवती चीख पड़ी–
नहीं प्रभु – नहीं, बालक की शरारत का इतना कठोर दण्ड न दें – हां प्रभु, अपना शाप वापस ले लें अन्यथा मैं अपना सिर आपके चरणों में पटक-पटक कर जान दे दूंगी!
स्वामी-क्षमा कर दीजिए! अबोध बालक की शरारत का दण्ड अपनी भक्त को क्यों दे रहे हैं?
तब–
मेरा शाप मिट तो नहीं सकता, किन्तु इसका प्रभाव इस तरह कम हो सकता है कि –
... यह लड़का जो भी शरारत करेगा, उससे इसे कोई हानि नहीं पहुंचेगी, बल्कि कुछ लाभ ही होगा। ऐसे ही शरारतों के लाभ से इसका जीवन यापन होगा!
क्या?
इसके बाद शिव तो पार्वती के साथ चले गए। लेकिन–

"उनके शाप के कारण बांकेलाल की शरारतें दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगीं। एक दिन की बात है, गांव का दूधिया रघु पेड़ के नीचे उदास बैठा था।

उफ़! अब क्या होगा! आज तो बच्चे भूखों मर जाएंगे। कम्बख्त बिल्ली ने ऐसा रास्ता काटा कि पत्थर की ठोकर लगने से सारी दही जमीन पर आ पड़ी।

तभी कहीं उधर से बांकेलाल निकला और उसने एक सरसरी नजर रघु पर डाली। पर तभी उसकी नजर ठीक उसके ऊपर डाल पर लटके मधु-मक्खियों के छत्ते पर पड़ी और—

बहुत दिन हो गए, मैंने किसी का कचौरी जैसा फूला मुंह नहीं देखा!

और अगले ही पल—

खटाक

बाप रे, मुसीबत!

मधु-मक्खियों से बचने के लिए रघु ने सिर की पगड़ी को खोलकर ओढ़ लिया बांकेलाल पहले ही भाग खड़ा हुआ था।

टप टप

थोड़ी देर बाद जब मधु-मक्खियों की हलचल खत्म हुई तो रघु उठा और जब उसने देखा कि—

अरे, मेरा मटका तो शहद से भर गया! वाह! ऊपर वाले किसी को छप्पर फाड़कर देता है और किसी को छत्ता फोड़कर!

रघु ने गांव के बनिए को शहद बेचकर घर के लिए सामान खरीदा। तभी उसकी नजर सामने से आते बांकेलाल पर पड़ी।

अरे! यह तो वही लड़का है, जिसकी वजह से आज मेरे बच्चे भूखे सोने से बच गए!

अरे, बेटा जरा सुनना!

बाप रे, भागो!

बांके भागा तो रघु भी उसके पीछे दौड़ पड़ा...

...और जल्दी ही उसे पकड़ लिया।

अब तो फंस गया बेटा बांके, आज तेरी खैर नहीं!

बेटा, आज तेरी ही वजह से मेरे घर का चूल्हा जलेगा। बेटा तो शहद पूरे दस सिक्कों में बिका...

...और तू ले यह एक सिक्का, और मौज कर...

!!!

एक सिक्का बांकेलाल को देकर रघु चलता बना, और-

...बांकेलाल-

बेईमान कहीं का! मेरी वजह से फायदा इसे दस का हुआ और देकर गया मुझे एक सिक्का कम से कम पांच तो देता।

बांकेलाल के पड़ोसी लालू व चालू, जो गांव में बेहद शरीफ समझे जाते थे, वास्तव में पक्के चोर थे। उन्होंने आजकल अपने व आस-पड़ोस के गांवों में जबरदस्त सफाई अभियान चलाया हुआ था। एक दिन सुबह मुंह अंधेरे ही गांव के लाला सुखीराम के घर झाड़ू फेर कर लौटे और फिर चोरी का माल अपने घर के पिछवाड़े दबाकर, उस स्थान की पहचान के लिए वहां पर एक आम का पौधा लगा दिया। और अंदर जाकर चैन की नींद सो गए। और सुबह जब बांकेलाल की निगाहें उस आम के पौधे पर पड़ी तो-

हूं, तो पड़ोसी आम खाएंगे, और हम ललचाएंगे- नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं इस पौधे को जड़ से उखाड़ दूंगा!

और जैसे ही बांकेलाल ने पौधे को उखाड़ा–

अरे, बापरे! सोने के सिक्के!

तभी लालू-चालू भी वहां पहुंच गए।

ओह! इस कम्बख्त की वजह से तो हमारी पोल खुल जाएगी।

हां, अब इसका जिन्दा रहना ठीक नहीं!

तभी बांकेलाल की नजर उन पर पड़ी-तो वह दौड़कर दीवार के पार कूदा।

जिन्दा नहीं बचना चाहिए!

बाप रे भागो!

लेकिन जल्दबाजी में वह दूसरी तरफ गिर गया। ठीक तभी सुखीराम के घर हुई चोरी की जांच करने स्वयं नगर कोतवाल, सैनिकों सहित उधर से गुजर रहा था।

हाय मैं मरा!

क्या बात है बेटा, तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?

ज...जी...वो...

उसी समय चारदीवारी पर लालू-चालू प्रकट हुए और बाहर सैनिकों को देख वे घबरा गए।

क्या मतलब? ये हमें देख कर घबरा क्यों रहे हैं? जरूर दाल में कुछ काला है!

खतरा! भाग बे चालू!

और फिर–
सैनिको ! पकड़ो उन दोनों को !

सैनिक जल्दी ही लालू-चालू को पकड़ लाए।
अब जल्दी ही अपनी राम कहानी, अपनी जुबानी बता डालो, वरना..
हमें माफ कर दीजिए!
...फिर लालू-चालू ने अपने अपराध स्वीकार कर लिए...

... और साथ ही अब तक की सारी चोरियों का माल भी उनके हवाले कर दिया तब–
अरे, बाप रे ! ये तो पुराने घाघ हैं।
और तो नहीं है कुछ ?
नहीं हुजूर!

दूसरे दिन नगर कोतवाल के कहने पर सभा का आयोजन किया गया।
भाइयो ! आपके गांव के बांकेलाल ने बहुत पुराने चोरों को पकड़वा कर अनेक चोरियों का माल दिलवाया है। ऐसे रंगे चोरों को पकड़ना बहुत मुश्किल था। मैं चोरी के माल में से दसवां भाग बांकेलाल को इनाम में देता हूं।
वाह! भई वाह! बांकेलाल ने तो कमाल कर दिया!
ननकुआ का लड़का तो कमाल का निकला!

बारिश का मौसम था। बांकेलाल अपने घर के आंगन में चारपाई पर बैठा कोई नई-शरारत करने की योजना बना रहा था।

...बेटा बांके! अबकी बार कोई ऐसी तरकीब सोच, जिससे हर बार की तरह तेरी योजना की टांग न टूट सके...

...मैं चाहता कुछ हूं और होता कुछ है!

और इस तरह शरारतें करता और उसके लाभ उठाता हुआ बांकेलाल बड़ा हो गया। लेकिन बांकेलाल का दुर्भाग्य था कि ननकू व गुलाबवती पिछले ही वर्ष उसे अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गए थे। दूर-दूर के गांवों में भी उसकी प्रसिद्धि फैल चुकी थी।

तभी वह कुछ सोचते-सोचते चुटकी बजाकर उछल पड़ा।

वो मारा पापड़ वाले को!

और फिर तुरन्त ही अपने दिमाग में आई नई योजना को कार्यरूप देने के लिए वह गांव के मुखिया के घर की ओर चल दिया।

आह! अब मैं जल्दी ही माला-माल हो जाऊंगा!

हर बार एक दो आदमी की खाट खड़ी करने की सोचता हूं, तो उसकी खाट खड़ी होने की बजाए उड़न खटोला बन जाती है।...

...पर इस बार पूरे गांव का बेड़ागर्क करके मानूंगा!

मुखिया जी घर के बाहर ही चौपाल पर कुछ लोगों के साथ बैठे, किसी मामले पर विचार कर रहे थे। तभी बांके-लाल उनके सामने कुछ परेशान सा हुलिया बनाए पहुंचा।
राम-राम मुखिया जी!
राम-राम बांकेलाल! आओ बैठो! कहो, कैसे आना हुआ? सब खैरियत तो है?

मुखिया जी, मेरी तो खैर है प-पर...पर...
क्या बात है? बांकेलाल तुम हिचकिचा क्यों रहे हो?

बात यह है मुखिया जी, कि... आज शाम तक अपने गांव में एक भयानक मुसीबत आने वाली है!
!?

बांकेलाल की बात सुनकर वहां पर मौजूद सारे लोग हैरान हो उठे।
कैसी मुसीबत?
तुम कहना क्या चाहते हो बांकेलाल?
तबाही-विनाश... बर्बादी...

बांकेलाल के मुंह से तबाही-विनाश... बर्बादी जैसे शब्द सुनकर गांव वालों के मुंह से चीख निकल पड़ी।
आखिर बात क्या है? तुम किस तबाही या बर्बादी की ओर संकेत कर रहे हो बांकेलाल?

मुरिवया जी, बात दरअसल यह है कि कल रात शंकर भगवान ने मुझे सपने में दर्शन दिए और कहा कि आज रात तक इस गांव...
...में भयानक बाढ़ आने वाली है, जिससे सारा गांव पानी में डूब जाएगा।
!!!
???
कोई उपाय भी बताया उन्होंने इस मुसीबत से बचने का?
जी हां!
भगवान शंकर ने मुझसे सपने में कहा कि सारे गांव वाले अपने-अपने घरों को छोड़कर ऊंचे टीलों पर पहुंच जाएं। इसी में सबका कल्याण है।
ओह, ठीक है बांके लाल! तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! तुमने समय रहते यह खबर...
...देकर बहुत बड़े पुण्य का काम किया है। मैं अभी यह खबर गांव...
...में पहुंचाए देता हूं। और आप सब लोग तो आने वाले समय की गम्भीरता से परिचित हो ही चुके हैं। अतः आप लोग अपने घरों में जाकर बचाव की तैयारी करें।
ठीक है मुरिवया जी! चलो भाइयो!

और इसके साथ ही बांकेलाल अपनी योजना के सफल होने की आशा में मन ही मन खुश होता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।
वाह! क्या शक्तिबाण चलाया है!
और घर पहुंचकर
हा... हा... हा... हो... हो... हो... खूब
मूर्ख बनाया मैंने मुखिया को। अब आएगा मजा। सारे गांव वाले अपने-अपने घरों को छोड़कर गांव से बाहर ऊंचे टीलों पर चले जाएंगे। और मैं उनके घरों में घुसकर...
... अच्छा खासा माल बटोर लाऊंगा। और जब कल मुखिया जी मुझसे कहेंगे बाढ़ नहीं आई तो कह दूंगा मैं क्या करूं, जैसा मुझे सपना आया था, मैंने आपको बता दिया था। हा... हा... हा...
और यही सब सोचते हुए वह सो गया।
उधर गांव के भोले-भाले लोग मुखिया जी द्वारा भेजे गए संदेश को सुनकर गांव छोड़ने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी आकाश में काले-काले बादल गरजने लगे।
ओह! इतना खराब मौसम।
अरे भोला, मुखिया जी ने सच ही कहलवाया है। ऐसी भीषण बरसात मैंने पहली बार देखी है।
मुन्ने की मां जल्दी करो! बस अपने मतलब का थोड़ा बहुत सामान ले लो और निकल चलो ऊंचे टीले की ओर!
आप मुन्ने को पकड़िए मैं सामान सम्भालती हूं!

और कुछ ही देर बाद–

भागो जल्दी करो!

हे भगवान रक्षा करो!

कृपा भोलेनाथ

कुछ देर बाद जब पूरा गांव निर्जन हो चुका था बांकेलाल अपने घर से निकल कर बारिश में भीगता हुआ गांव के महाजन के घर की ओर चल दिया।

अरे वाह! यह तो सोने पर सुहागा हो गया। गांव वाले इस बारिश को देख कर मेरी बात को सच समझ रहे होंगे। और मुझे भी ऐसे सुहावने मौसम में लोगों का घर साफ करने में अलग ही मजा आएगा।

... सबसे पहले मैं गांव के महाजन लाला हरदयाल के घर में घुस कर उसका माल समेटूंगा, क्योंकि उसके यहां काफी मोटा माल मिलने की उम्मीद है।

इधर गांव वाले टीले पर पहुंचे और बरसात से बचने की व्यवस्था करने लगे।

तभी एक जगह तंबू के लिए बांस गाड़ रहे तीन-चार व्यक्तियों के पास एक औरत घबराई हुई आई।

रामू के बप्पा... व...व... वो...

क्या बात है कमला? तुम कुछ परेशान सी नजर आ रही हो!

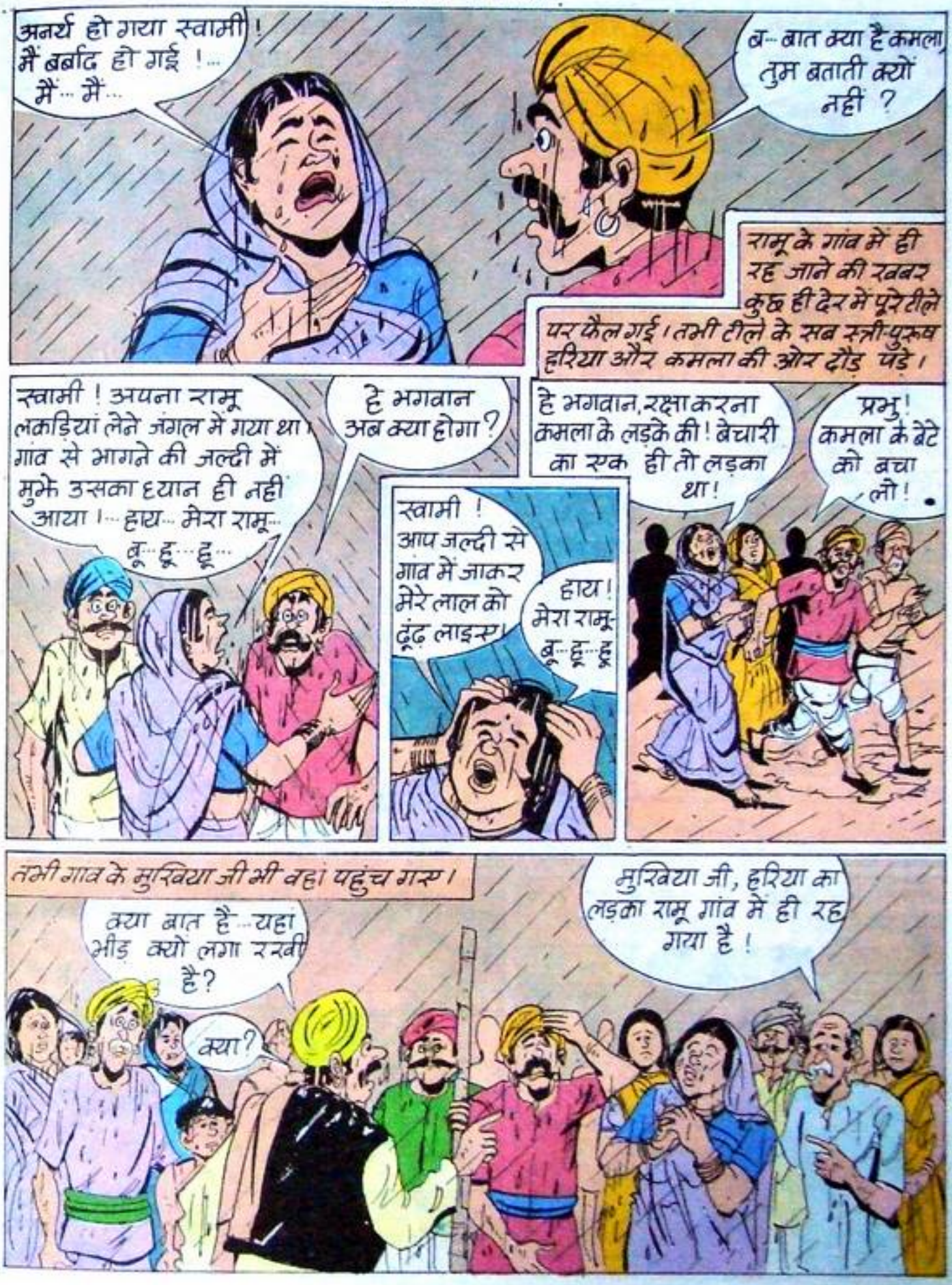
अनर्थ हो गया स्वामी ! मैं बर्बाद हो गई ! ... मैं... मैं...
ब-बात क्या है कमला, तुम बताती क्यों नहीं ?
रामू के गांव में ही रह जाने की खबर कुछ ही देर में पूरे टीले पर फैल गई। तभी टीले के सब स्त्री-पुरुष हरिया और कमला की ओर दौड़ पड़े।
स्वामी ! अपना रामू लकड़ियां लेने जंगल में गया था। गांव से भागने की जल्दी में मुझे उसका ध्यान ही नहीं आया। ... हाय... मेरा रामू... बू... हू... हू...
हे भगवान अब क्या होगा ?
स्वामी ! आप जल्दी से गांव में जाकर मेरे लाल को ढूंढ लाइए।
हाय ! मेरा रामू... बू... हू... हू
हे भगवान, रक्षा करना कमला के लड़के की ! बेचारी का एक ही तो लड़का था !
प्रभु ! कमला के बेटे को बचा लो !
तभी गांव के मुखिया जी भी वहां पहुंच गए।
क्या बात है... यहां भीड़ क्यों लगा रखी है ?
क्या ?
मुखिया जी, हरिया का लड़का रामू गांव में ही रह गया है !

उफ ! अब तो बारिश भी तेज है। और तूफान भी जोरों पर है। समझ नहीं आता...
...ऐसा करो तुम चार-पांच लोग हरिया के साथ गांव जाकर रामू को ढूंढ़कर लाने की कोशिश करो !
हरिया तीन-चार लोगों के साथ गांव की ओर चल दिया।

और इधर जोरों की बारिश और तूफान में बांकेलाल महाजन के घर के सामने खड़ा था।
इस मोटे सेठ के घर के अंदर घुसने का तो रास्ता समझ नहीं आता ! कम्बख्त ने कितनी ऊंची दीवारें और मोटे-मोटे दरवाजे बनाए हैं।

तभी कुछ सोचकर -
हूं... अगर किसी तरह छत पर पहुंच जाऊं तो शायद अंदर घुसने का कोई मार्ग मिल जाए।

बांकेलाल की निगाहें महाजन की छत पर पहुंचने के उपाय की तलाश में चारों तरफ दौड़ने लगीं -
पर ऊपर छत तक पहुंचा कैसे जाए ?

अहा, वो रामू के घर के पिछवाड़े लकड़ी की सीढ़ी दिखाई पड़ रही है!

और अगले ही पल बांकेलाल रामू के घर के पिछवाड़े पड़ी लकड़ी की सीढ़ी को उठा लाया।

और फिर सीढ़ी महाजन के मकान की दीवार पर लगा कर उस पर चढ़ने लगा।

उधर रामपुर गांव के पास बहने वाली नदी में बाढ़ का पानी खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया।
अब महाजन के घर के आंगन में उतरने के लिए सीढ़ी लाकर यहां लगानी पड़ेगी।

और तभी भयंकर बाढ़ से नदी का बांध भयानक आवाज करता हुआ टूट पड़ा।
धड़ाम
धड़ाम

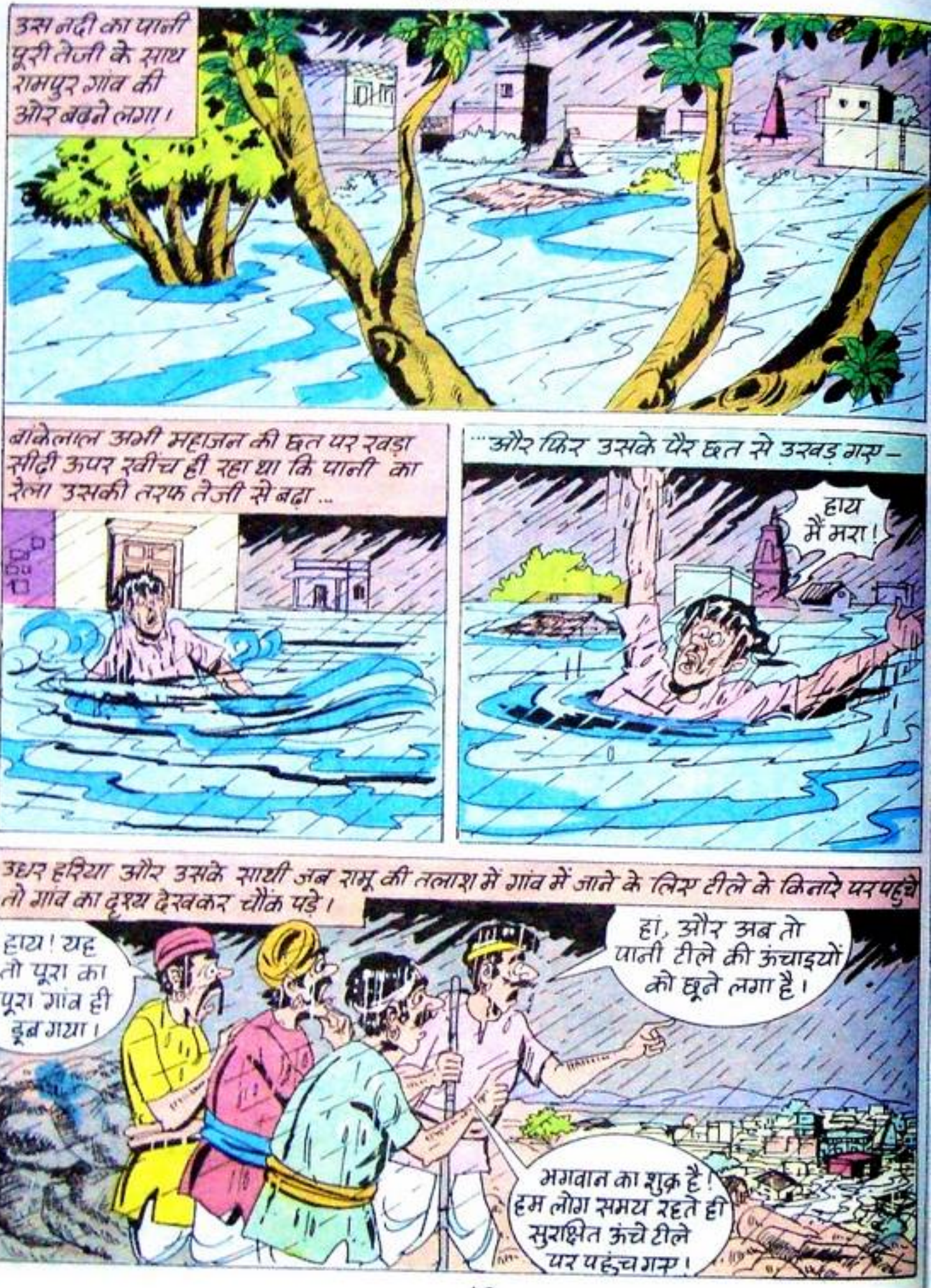
उस नदी का पानी पूरी तेजी के साथ रामपुर गांव की ओर बढने लगा।
बांकेलाल अभी महाजन की छत पर खड़ा सीढ़ी ऊपर खींच ही रहा था कि पानी का रेला उसकी तरफ तेजी से बढ़ा ...
...और फिर उसके पैर छत से उखड़ गए –
हाय मैं मरा!
उधर हरिया और उसके साथी जब रामू की तलाश में गांव में जाने के लिए टीले के किनारे पर पहुंचे तो गांव का दृश्य देखकर चौंक पड़े।
हाय! यह तो पूरा का पूरा गांव ही डूब गया।
हां, और अब तो पानी टीले की ऊंचाइयों को छूने लगा है।
भगवान का शुक्र है! हम लोग समय रहते ही सुरक्षित ऊंचे टीले पर पहुंच गए।

... हां! वरना शायद हममें से एक भी जीवित नहीं बचता। सबके सब इस बाढ में डूब मरते।
मैं कहता हूं भला हो बांकेलाल का, जिसने समय रहते खतरे की सूचना देकर पूरे गांव को मरने से बचा लिया।

...तभी हरिया को लगा कि, जैसे उसका रामू पानी में डूबता हुआ उसे पुकार रहा है। और...
न... नहीं, मेरे लाल! तू चिन्ता मत कर मैं आ रहा हूं।
बचाओ... बचाओ... बापू मुझे बचा लो!

और अचानक हरिया अर्द्धविक्षिप्त सा पानी की ओर दौड़ पड़ा।
मेरे बेटे, मेरे रहते तुझे कुछ नहीं हो सकता। मैं... मैं... आ रहा हूं!

अभी हरिया पानी में छलांग लगाने ही वाला था कि उसके साथियों ने उसे पकड़ लिया।
ये क्या पागलपन है हरिया?
छोड़ दो मुझे! व... वह देखो, मुझे मेरा बेटा बुला रहा है।

होश में आओ हरिया! देखो, हम तुम्हारे साथी हैं।

होश में कैसे आऊं? हाय मेरा लाल! बू-हू-हू

हरिया रोता-पछाड़े खाता वहीं बेहोश हो गया। और अपने साथियों की बांहों में झूल गया।

ओह! लगता है बेटे के गम में होश खो बैठा है।

जब वे तीनों बेहोश हरिया को लेकर ऊंचे टीले पर पहुंचे, अपने पति की बेहोशी और पूरे गांव के डूब जाने की खबर सुन और अपने बेटे रामू के जीवित रहने की रही-सही आस खोकर कमला जोर-जोर से रोने लगी।

उधर बांके लाल पानी के बहाव के साथ-साथ डूबता-उतराता हुआ एक तरफ बहा चला जा रहा था।

बुड़क...बुड़क...

बचाओ... बचाओ...

तभी बांकेलाल की नजर अपने साथ-साथ बहते लकड़ी के गट्ठर पर पड़ी। जिस पर हरिया का लड़का रामू पानी के बहाव के साथ-साथ बह रहा था।

अगर मैं इस लड़के को गट्ठर से धकेल कर...

...यह गट्ठर हथिया लूं तो शायद बच जाऊं!

और मन में इस विचार के आते ही बांकेलाल ने उस लड़के को गट्ठर से उठा कर फेंकने की कोशिश की...

...तो लकड़ी का गट्ठर पानी के तेज बहाव में दूर बह गया।

अरे,! यह क्या?

अब क्या होगा?

बांकेलाल पानी में डूबता उतरता बहता रहा। पर हाथ में पकड़े रामू को उसने न छोड़ा।

इसी के साथ बांकेलाल की चेतना भी लुप्त होती चली गई।

सुबह होने तक बारिश रुक गई। और तूफान शान्त हो गया था। गांव के लोगों ने टीले के किनारे पर जाकर देखा। चारों ओर दूर-दूर तक बाढ़ का पानी फैला हुआ था। उसे देखते ही हरिया और कमला रामू की याद करके सिसक उठे।

गांव वाले सामने देखते ही चौंक पड़े।

अरे, लगता है कोई आदमी है उस छप्पर पर।

हां, पता नहीं बेचारा कौन होगा?

पता नहीं अब तक जिन्दा भी होगा या नहीं?

एक पल के लिए हरिया और कमला भी गम भूलकर उत्सुकतावश उधर ही देखने लगे।

कुछ देर बाद छप्पर स्वतः ही बहता हुआ किनारे आ गया।

अरे, इस पर तो बांकेलाल और हरिया का लड़का है।

अरे, हां आश्चर्य है।

!!??

हरिया और कमला अपने बेटे को सामने देख, एवं उसे मरा हुआ जानकर उसके ऊपर गिर पड़े।

हाय! मेरा लाल! बू...हू...हू...

लेकिन गांव का बूढ़ा वैद्य, बांकेलाल और रामू के उठते-गिरते सीने को एक ही नजर में ताड़ गया।

अरे जल्दी करो! इन दोनों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाओ ताकि मैं इनका उपचार कर सकूं!

पर...पर... वैद्य जी ये तो...

नहीं, ये दोनों अभी जिन्दा हैं। देखो नहीं रहे, इनकी सांसें चल रही हैं।
ओह! शुक्र है भगवान का!
फिर गांव वाले बेहोश रामू और बांके लाल को उठाकर तम्बू में ले आए और वैद्यजी उनका उपचार करने लगे। फिर थोड़ी ही देर में पहले बांके लाल की चेतना वापस लौटी।
आह!
उसने अभी अपनी आंखें हल्की सी खोली ही थीं कि गांव वालों की भीड़ देखकर उसने अपनी आंखें पुनः बन्द कर लीं।
ये गांव वाले मुझे क्यों घेरे खड़े हैं और मैं यहां कैसे आया?
फिर शीघ्र ही चेतना खोने के पूर्व की पूरी स्थिति बांके लाल के मस्तिष्क में घूम गई।
ओह! लगता है गांव वालों ने मेरा झूठ पकड़ लिया है। तभी ये सब मुझे घेरे खड़े हैं। अब इनसे कैसे जान बचाई जाए?

मेरी इतनी शानदार योजनाओं की टांग तो हर बार टूटी है, पर इतनी बुरी तरह कभी नहीं कि जान बचाने के लाले पड़ जाएं।
धन्य हो बांकेलाल! इसने तो अपनी जान पर खेलकर हरिया के लड़के को बचाने की कोशिश की है।
वाकई बांकेलाल की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है।

आंखें बन्द किए लेटे हुए बांकेलाल ने जब गांव वालों की बातें सुनीं तो बहुत हैरानी हुई। कहां वह लोगों से जान बचाने के उपाय सोच रहा था और कहां-
एक हरिया के लड़के रामू को ही क्यों, इसने तो सारे गांव को इस मुसीबत से बचाया।
हूं,...तो यह बात है!

हां, जो अगर बांकेलाल इस बात की पहले ही सूचना न देता तो शायद हममें से कोई भी जीवित न बचता!
सच ही बांकेलाल तो हमारे लिए ईश्वर का वरदान है।
अरे! कम्बख्तो, जो अगर सच ही मुझे पता होता कि आज ही इस गांव में बाढ़ आने वाली है तो मैं तुम लोगों को कभी न बताता- बल्कि मैं तो...

...तुम लोगों को मरने के लिए गांव में छोड़ कर खुद गांव से निकल जाता और जब तुम सब लोग मर-खप गए होते तो मैं अकेला पूरे गांव का बेताज बादशाह होता। और फिर...
तुम लोगों के घरों को खोद-कर उनमें से सारा माल-यानी हथिया लेता, पर सत्यानाश हो इस बाढ़ का जो असमय ही आकर मेरी शानदार योजना का बेड़ागर्क कर गई।

तभी बूढ़े वैद्य का अथक परिश्रम रंग लाया। और हरिया के बेटे रामू की चेतना भी वापस लौट आई।

आह! अम्मा!

ओह! शुक्र है, भगवान का बेटा आंखें खोलो!

हां, हरिया, तुम्हारा रामू तो अब खतरे से बाहर है...

म...मेरा रामू बच गया। व...वो अभी-अभी बोला था न वैद्य जी?

...और बांकेलाल को भी अब तक होश में आ जाना चाहिए। जाने क्या बात है? नब्ज तो इसकी ठीक चल रही है।

जब बांकेलाल के मन में छिपा भय खत्म हुआ तो उसने भी कराहते हुए आंखें खोलीं।

आह! म...मैं कहां हूं? और हरिया का लड़का रामू कहां है?

तुम अब सुरक्षित हो बांकेलाल! और हरिया का लड़का भी सकुशल है।

हे ईश्वर तू बड़ा दयालु है।

बांकेलाल के होश में आते ही गांव के लोग प्रसन्न हो गए।

भई बांकेलाल जैसे नेक पुरुष के ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा होती है।

ईश्वर देवता स्वरूप बांकेलाल जी को लम्बी उम्र दे!

एक सप्ताह में बाढ़ का सारा पानी निकल गया तो सब लोग गांव में पहुंचे। टूटे-फूटे मकानों की मरम्मत करने के बाद जब रामपुर गांव का जन-जीवन कुछ हद तक सुधरा तो गांव वालों ने मिलकर चौपाल पर एक सभा आयोजित की—

बांकेलाल, आज तुम्हारे ही कारण हम सब लोग सलामत हैं। तुमने अपनी जान पर खेलकर रामू को बचाया।

बांकेलाल, भइया हम तुम्हारे इस पुण्य भरे कार्य की जितनी भी तारीफ करें, कम है और हम गांव के सब लोगों की तरफ से आपको यह स्वर्ण आभूषण भेंट करते हैं।

य... यह आप लोग?

ले लो बेटा, यह तो सप्रेम भेंट है!

सत्यानाश हो इस बाढ़ का! वरना मैं इतनी थोड़ी सी नहीं पूरे गांव की दौलत का अकेला मालिक होता।

ठीक है, आप लोग इतना कहते हैं तो मैं भला कैसे इंकार कर सकता हूं!

और सारे रामपुर वासी बांकेलाल के मन में उठ रहे असल विचारों से अनभिज्ञ उसे प्रशंसात्मक दृष्टि से देख रहे थे।

वाकई में देवता-स्वरूप इंसान है बांके!

वाह! क्या विचार हैं बांकेलाल के!

उधर विशालगढ़ के राजा विक्रमसिंह का दरबार लगा हुआ था। इसी दरबार में तरह-तरह की चर्चाओं के बीच महाराजा विक्रमसिंह, बांकेलाल के एक-दो कारनामे सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि –
मंत्री धरमसिंह! आप फौरन सैनिकों के साथ रामपुर गांव जाकर बांकेलाल को ससम्मान राज अतिथि के रूप में लिवा-कर लाएं!
जो आज्ञा महाराज!

एक बात और! राजअतिथि को आते समय किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस बात का विशेष ख्याल रखा जाए!
आज्ञा का पालन पूरी निष्ठा से किया जाएगा!
और फिर कुछ देर बाद मंत्री धरमसिंह एक सुन्दर रथ और पांच घुड़सवार सैनिकों के साथ रामपुर गांव की ओर चल पड़ा।

और उधर बांकेलाल अपने घर में नई शरारत के लिए मन ही मन कोई योजना बना रहा था।
अब किसकी और कैसे खाट खड़ी की जाए, जिससे मेरी जिन्दगी के दिन फिर जाएं?
कि तभी-
खट-खट!
कौन है भई?
भला कौन हो सकता है?

हम हैं विशालगढ़ के सैनिक!
हे भगवान! ये सैनिक लोगों का मुझसे क्या काम? हो न हो किसी ने मेरी कोई शिकायत की है जो ये मुझे गिरफ्तार करने आए हैं।
बांकेलाल! दरवा ना खोलो! बाहर मंत्री जी आपको बुलवा रहे हैं।
हे भगवान अब क्या होगा?
...जरूर कोई घपला हो गया है जो स्वयं मंत्री जी मुझे गिरफ्तार करने आए हैं। पर क्या घपला हुआ है मुझसे?
और सैनिकों ने देर होती देख जोर से दरवाजा भड़भड़ाया.
दरवाजा खोलो! नहीं तो तोड़ दिया जाएगा।
खतरा! अब मुझे फौरन भाग निकलना चाहिए।
बांकेलाल दरवाजे को इस तरह भड़भड़ाए जाने पर और भी बुरी तरह डर गया और खिड़की की ओर लपका-
पर तभी बाहर निकलते ही मंत्री धरमसिंह की नजर उस पर पड़ी।
देखो, वो बांकेलाल के घर की खिड़की से कौन भाग रहा है? मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है। तुम दौड़ कर उसे पकड़ लाओ।

फिर शीघ्र ही वह सैनिक बांकेलाल को पकड़ लाया।

कौन हो तुम और भाग क्यों रहे थे?

ज...जी, मेरा नाम बांकेलाल है। और...

क्या?

क्या?

मंत्री के संकेत पर सैनिकों ने फौरन बांकेलाल को छोड़ दिया।

बांकेलाल जी! हम आप ही को साथ ले जाने आए हैं।

प...पर... मेरा कसूर?

मंत्री धरमसिंह मुस्करा कर बोला—

आपको किसी अपराध के लिए नहीं, बल्कि सम्मानित करने के लिए महाराज ने बुलवाया है।

डरे हुए बांकेलाल को मंत्री के शब्द व्यंग्यात्मक प्रतीत हुए।

हुंह! महाराज भला मुझे क्यों सम्मानित करने लगे! अवश्य ही मेरे अनगिनत अपराधों में से किसी एक का भण्डाफोड़ हुआ है। जो ये यमदूत मेरे पीछे पड़े हैं?

क्या सोचने लगे—? चलिए जल्दी कीजिए।

प...पर मैं तो आपके साथ नहीं जाऊंगा मेरी तबियत ठीक नहीं है।

मंत्री धरमसिंह अच्छे-भले बांकेलाल को बहाने बनाते देख क्रोधित हो उठा।

देखिए बांकेलाल जी, यदि आप तुरन्त ही हमारे साथ खुशी से चलने को राजी न हुए तो मजबूरन ही हमें...

...आपके साथ सख्ती करनी पड़ेगी।

और बांकेलाल समझ गया कि उसकी बात मानने में ही सलामती है।

ठीक है हुजूर! जैसी आपकी इच्छा!

फिर महामंत्री उसे चार घोड़ों वाले सुन्दर रथ पर बिठाकर चल पड़ा।

और जब मंत्री धरमसिंह बांकेलाल को लेकर विशालगढ़ के राजमहल में पहुंचा तो रात हो चुकी थी। अतः बांकेलाल को राजा के विशेष कक्ष में ले जाया गया।

आइए बांकेलाल जी, आपका स्वागत है! हमने आपकी बहुत तारीफें सुनी हैं।

ज... जी, यह तो आपकी महानता है, जो आप इस नाचीज को किसी काबिल समझते हैं।

नहीं बांकेलाल, न तो हमें किसी की झूठी तारीफ करने की आदत है, न सुनने की। हां, हमने तुम्हारे लोक-कल्याण के कई कारनामे सुने हैं और सुना है, तुमने पूरा गांव डूबने से बचाया है।

हूं, तो यह बात है! मैं तो बेकार ही डर गया था।

मंत्री जी! आप तुरन्त बांकेलाल के जलपान का प्रबन्ध कराएं।

जो आज्ञा महाराज!

आहा! शाही दावत मजा आ गया!

धरमसिंह कमरे से बाहर चला गया।

हां, तो बांकेलाल जी अब बताएं कि आपको यहां तक आने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं हुई?

ज... जी कोई खास तो नहीं।

क्या मतलब? देखो बांकेलाल! मैंने मंत्री धरमसिंह को विशेषकर यह निर्देश दिया था कि वह तुमको सम्मान सहित हमारे पास लेकर आए... और इस बात का विशेष ख्याल रखे कि तुमको रास्ते में कोई तकलीफ न हो...

... और तुम शायद नहीं जानते कि हम राज-आज्ञा का उल्लंघन करने वाले किसी राजकर्मचारी या अधिकारी को फौरन राजपद से हटा देते हैं।

क्या?

राजा विक्रम की बात सुनकर बांकेलाल चौंक पड़ा।

और तभी उसकी उलटी खोपड़ी में एक नई शरारत ने जन्म लिया।

यदि मैं महाराज से कह दूं कि यहां लाते समय उसके राजमंत्री ने मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया, तो महाराज उसे तुरन्त ही मंत्री पद से हटा देंगे और...

... उसकी जगह जो नया मंत्री बनेगा, वह मुझसे निश्चित तौर पर खुश होगा, क्योंकि वह अपने मंत्री बनने का कारण मुझे मानेगा। और हो सकता है वह मुझसे खुश होकर कुछ इनाम-इकराम वगैरह भी मुझे दे दे!

क्या बांकेलाल की इस शरारत के कारण मंत्री धरमसिंह को अपना पद छोड़ना पड़ा या फिर भगवान शिव के वरदान के कारण उसे बहुत लाभ हुआ?

जानने के लिए पढ़ें

कर भला हो भला

इसी सैट में प्रकाशित